Date - [redacted]

Sanskrit (Honours)
B.A. (1st Part)

डॉ० [illegible] मिश्र
अतिथि शिक्षक
विषय- संस्कृत
आर०सी०एस० कॉलेज, मंझौल
बेगूसराय

लघुसिद्धान्त कौमुदी (अच् सन्धिः)-

पूर्व में बतलाया जा चुका है कि किस प्रकार 'एत्येधत्यूठ्सु' सूत्र से 'वृद्धि' का कार्य होता है। अब आगे बढ़ते हैं-

(वार्त्तिक) अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम् - 'अक्ष' शब्द से 'ऊहिनी' शब्द आगे हो तो पूर्व एवं पर के स्थान में वृद्धि एकादेश होता है।

अक्षौहिणी सेना - 'अक्ष + ऊहिनी' इस अवस्था में 'अक्ष' के 'अ' एवं 'ऊहिनी' के 'ऊ' को सन्धिकार्य के निमित्त 'आद् गुणः' सूत्र प्रवृत्त था गुणकार्य के लिए। परन्तु 'अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम्' वार्त्तिक से वृद्धिकार्य होने पर 'अक्षौहिणी' सिद्ध रूप बनता। प्रस्तुत रूप में नकार का णकार 'पूर्वपदात् संज्ञायामगः' इस सूत्र से हुआ है। 'अक्षौहिणी' सेना के चतुरङ्गिणी रूप के लिए प्रयुक्त होता है। परम्परानुसार इसमें विभिन्न सैनिकों की संख्या इस प्रकार होती है-

हाथी - 21870
रथ - 21870
घोड़े - 65610
पैदल - 109350

218700

(वार्तिक) प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु – 'प्र' उपसर्ग से 'ऊह', 'ऊढ़', 'ऊढि', 'एष' एवं 'एष्य' शब्द आगे रहें तो पूर्व एवं पर के स्थान में वृद्धि एकादेश होता है।

प्रौहः (उत्कृष्ट तर्क) – 'प्र + ऊहः' इस अवस्था में 'प्र' के 'अ' एवं 'ऊहः' के 'ऊ' को मिलाकर गुणकार्य के लिये 'आद्गुणः' सूत्र की प्रवृत्ति होती है परन्तु 'प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु' वार्तिक से 'वृद्धि' कार्य होने से 'प्रौहः' यह रूप सिद्ध होता है

प्रौढः (बढ़ा हुआ) – 'प्र + ऊढः' इस अवस्था में 'प्र' के 'अ' एवं 'ऊढ' के 'ऊ' को मिलाकर सन्धि कार्य के लिये 'आद्गुणः' सूत्र की प्रवृत्ति होती है परन्तु 'प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु' वार्तिक से 'वृद्धि' कार्य होने से 'प्रौढः' यह रूप बनता है

प्रौढिः (प्रौढ़ता) – 'प्र + ऊढिः' इस अवस्था में 'प्र' के 'अ' एवं 'ऊढिः' के 'ऊ' को मिलाकर सन्धि कार्य के लिये 'आद्गुणः' सूत्र की प्रवृत्ति होती है परन्तु 'प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु' वार्तिक से 'वृद्धि' कार्य होने से 'प्रौढिः' यह रूप सिद्ध होता है

प्रैषः (प्रेरणा) – 'प्र + एषः' इस अवस्था में 'प्र' के 'अ' एवं 'एषः' के 'ए' को मिलाकर 'एङि पररूपम्' सूत्र से पररूप की प्राप्ति थी परन्तु 'प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु' वार्तिक से वृद्धि कार्य होने से 'प्रैषः' यह रूप बनता है

प्रैष्यः (नौकर) – 'प्र + एष्यः' इस अवस्था में 'प्र' के 'अ' एवं 'एष्यः' के 'ए' को मिलाकर सन्धि कार्य के लिये 'एङि पररूपम्' सूत्र की प्राप्ति थी, परन्तु 'प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु' वार्तिक से वृद्धि कार्य होने से 'प्रैष्यः' यह रूप बनता है

Rukmani Ranchu
[redacted]

— क्रमशः। —